संपादक के नोट

मैं मेरे प्रभु और मुक्तिदाता येशु मसीह के अतुलनीय नाम से तुम सभी का अभिवादन करती हूँ। मैं विश्वास करती हूँ कि अपने प्रभु येशु का अनुग्रह तुम सब की अगुवाई कर रहा है। **भजन संहिता** ९२रू१२ कहता है – **धर्मी जन खजूर के पेड़ के समान फूले–फलेंगे। और लबानोन के देवदार के समान बढ़ेंगे।** कौन धर्मी है? वह जो परमेश्वर का भय मानता है और उसके मार्गीं पर चलता है धर्मी है। वह जो हमेशा धर्मी होने कि इच्छा रखता है, और जो अपनी अंतरात्मा की आवाज़ के खिलाफ़ नहीं जाता है, और जो हमेशा दूसरों की मदद करना चाहता है, धर्मी कहलाता है। भजन रचईता **भजन संहिता** २४रू४–५ में कहता हैं – **वही जिसके हाथ निर्दीषष हैं और जिसका हृदय शुद्ध है, जिसने अपने मन को झूठी बात की ओर नहीं लगाया, न कपट से शपथ खाई है। उसे यहोवा की ओर से आशिष, हां, अपने उद्धार करने वाले परमेश्वर से धार्मिकता मिलेगी।** पवित्र शास्त्र में सबसे पहले गवाही देने वाला, कि वह धर्मी है, हाबिल था।

आज भी उसकी मृत्यु के बाद, उसकी गवाही उसकी धार्मिकता की बात करता है। **इब्रानियों** ११रू४ – **विश्वास ही से हाबिल ने परमेश्वर के लिए कैन से उत्तम बलिदान चढ़ाया, जिसके द्वारा उसके धर्मी होने की गवाही दी गई और परमेश्वर ने उसकी भेंटों के विषय में गवाही दी। यद्यपि हाबिल मर चुका है, फिर भी विश्वास के द्वारा अब तक बोलता है।** धर्मी के नाम से कहलाने वाला दूसरा व्यक्ति नूह था। **उत्पत्ति** ६रू९ – **नूह की वंशावली यह है। नूह तो धर्मी और अपने समय के लोगों में निर्दीष व्यक्ति था। नूह परमेश्वर के साथ साथ चला करता था।** क्योंकि नूह धर्मी था उसका पूरा परिवार बचा लिया गया। **उत्पत्ति** ७रू१ – **तब यहोवा ने नूह से कहा, ष्तू अपने समस्त घराने सहित जहाज में प्रवेश कर, क्योंकि इस पीढ़ी में तू ही मुझे धर्मी दिखाई देता है।**

सदोम और अमोरा नष्ट होने से पहले, अब्राहम ने इसे बचाने के लिए परमेश्वर को मनाने की कोशिश की अगर केवल १० धर्मी पुरुष वहाँ होते। लेकिन वहाँ पर्याप्त धर्मी लोग नहीं थे। सदोम और अमोरा को नष्ट कर दिया गया।

येशु हमें धर्मी बनाता है। येशु उसके लहू से हमारे सब अधर्म और हमारे सभी स्वार्थता से शुद्ध करता है। नबी यशायाह, **यशायाह** ५०रू८ में कहता हैं – **जो मुझे निर्दीष ठहराता है वह मेरे निकट है, अतः मुझ से कौन मुकदमा लड़ेगा?**

आओ, हम एक दूसरे का सामना करें! मेरा विरोधी कौन है? वह मेरे सामने आए! हम कैसे धर्मी बन सकते हैं? केवल येशु मसीह में विश्वास के द्वारा हम धर्मी हो सकते हैं। **रोमियों ५रू१ – इसलिए विश्वास से धर्मी ठहराए जाकर परमेश्वर से हमारा मेल अपने प्रभु येशु मसीह के द्वारा है।** येशु मसीह के लहू के द्वारा हम धर्मी हैं। **रोमियों ५रू९ – अतः इस से बढ़कर उसके लहू के द्वारा धर्मी ठहराए जाकर, हम उसके द्वारा परमेश्वर के प्रकोप से क्यों न बचेंगे?** इतना ही नहीं, लेकिन हमारे कर्मों के द्वारा हम धर्मी बन सकते हैं। **याकूब २रू२४– अतः तुम देखते हो कि मनुष्य केवल विश्वास से नहीं वरन् कर्मों से धर्मी ठहराया जाता है।**

एक धर्मी आदमी कौन है? वह जो झूठ से नफ़रत करता है। **नीतिवचन १३रू५ – धर्मी मनुष्य झूठ से घृणा करता है, परन्तु दुष्ट मनुष्य लज्जा तथा अपमानजनक कार्य करता है।**

धर्मी आदमी न्याय और सच्चे विवेक से प्यार करता है। **नीतिवचन १२रू५ – धर्मियों के विचार न्यायसगत होते है, परन्तु दुष्टों की सम्मतियां कपटपूर्ण होती हैं।** धर्मी आदमी ताड़ना लेता है। **नीतिवचन १५रू३२ – जो शिक्षा की उपेक्षा करता है, वह अपने आप को तुच्छ जानता है, परन्तु जो घुड़की को सुनता है, वह समझ प्राप्त करता है।**

पवित्र शास्त्र से एक धर्मी आदमी के सही गुणों को लेते हुए, हम भी अनुभव और हमारे प्रभु के आशिषों को प्राप्त करते हैं। **नीतिवचन २८रू२० – विश्वासयोग्य मनुष्य आशिषों की बहुतायत पाएगा, परन्तु जो शीघ्र ही धनी बनना चाहता है, वह दण्ड पाए बिना न रहेगा।**

हमारा प्रभु परमेश्वर हमेशा हम में सत्य होने कि इच्छा रखता है। **भजन संहिता ५१रू६ – देख, तू तो हृदय की सच्चाई से ही प्रसन्न होता है, और मन की गहराई में मुझे बुद्धी सिखाएगा।** परमेश्वर अब्राहम को आशिष देने का कारण यह था की अब्राहम में सच्चाई हमेशा से था। **नहेमायाह ९रू७–८ – तू ही यहोवा परमेश्वर है, जिसने अब्राम को चुनकर कसदियों के ऊर नगर में से बाहर निकाला और उसे अब्राहाम नाम दिया। और तू ने उसके हृदय को अपने प्रति विश्वासयोग्य पाया और तू ने उस से कनानियों, हित्तियों, एमोरियों, परिज्जियों, यबूसियों और गिर्गाशियों का देश उसको और उसके वंशजों को देने की वाचा बांधी, और तू ने अपनी प्रतिज्ञा को पूर्ण भी किया, क्योंकि तू धर्मी है।** अगर हम छोटी चीज़ों में विश्वासयोग्य हैं, तो परमेश्वर कई चीजों पर हमें शासक बना देगा। हमारा प्रभु, श्मूसा के सत्यता को देख रहा था और उसके दिल से वह उसकी सत्यता की गवाही देता है। **गिनती १२रू७ – परन्तु मेरे दास मूसा के साथ ऐसा नहीं है। वह तो मेरे पूरे घराने में**

विश्वासयोग्य है। वह परमेश्वर जिसने तुम्हारा आह्वान किया है, वफ़ादार है। **१ कुरिन्थियों १रू९ – परमेश्वर विश्वासयोग्य है, जिसके द्वारा तुम उसके पुत्र हमारे प्रभु येशु मसीह की संगति में बुलाए गए हो।** वह जिसने तुम को वादा किया है, विश्वासयोग्य है। **इब्रानियों १०रू२३ – आओ, हम अपनी आशा के अंगिकार को अचल होकर दृढ़ता से थामे रहें, क्योंकि जिसने प्रतिज्ञा कि है, वह विश्वासयोग्य है।**

हमारा परमेश्वर दयालु है और करुणा के साथ हमें आशीष देता है। वें जो दयालु हैं उन पर वह दया करता है और उन्हें आशीष देता है। प्रभु ने इस्त्राएलियों को अपने लिए चुना। लेकिन जब उन्होंने उसकी नहीं मानी, परमेश्वर का दिल टूट गया। **भजन संहिता ८१रू११–१३ – परन्तु मेरी प्रजा ने मेरी नहीं सुनी, और इस्राएल ने मेरी आज्ञा न मानी। इसलिए मैंने उसको उसके हृदय के हठ पर छोड़ दिया, कि वह अपनी ही युक्ति पर चले। भला होता कि मेरी प्रजा मेरी सुनती, और इस्राएल मेरे मार्गों पर चलता।**

छोटा बच्चा शमुएल ने कहा, ष्प्रभु तु बोल, तेरा दास सुनता है।ष अगर उसी तरह हम भी प्रभु की आवाज़ सुनते और पालन करते हैं, हम आशीष पाएंगे। **व्यवस्थाविवरण २८रू१३ – यहोवा तुझको पूँछ नहीं, सिर ही बनाएगा, तू नीचे नहीं, ऊपर ही रहेगा–यदि तू अपने परमेश्वर यहोवा की उन आज्ञाओं को जिनका आदेश मैं आज दे रहा हूँ सुनकर ध्यान से उनका पालन करे। निर्गमन २३रू२५ – परन्तु तुम अपने परमेश्वर यहोवा की उपासना करना, और वह तुम्हारे अन्न–जल पर आशिष देगा, और मैं तुम्हारे बीच से रोग दूर करूंगा।** मेरे प्यारे भाइयों और बहनों और इस पत्रिका के सभी पाठकों, प्रभु तुम सब का भला करें। वह बेहतरीन गेहूं और शहद के साथ तुम्हें खिलाएगा चट्टान से और तुम सभी को संतुष्ट करेगा। जब तक की हम फिर मिलें, प्रभु कि स्तुति हो।

पास्टर सरोजा म.

क्या आप प्रभु की भेंट के लिए तैयार हैं ?

पवित्र शास्त्र **भजन संहिता** १०६रू४ में कहता हैं – **हैं यहोवा, उस कृपा के अनुसार जो तू अपनी प्रजा पर करता है, मुझे स्मरण कर; उद्धार करके मेरी सुधि ले।** हम नहीं जानते कि प्रभु हमसे कब भेंट करेगा।
जब प्रभु ने याकूब से भेंट किया, वह एक आशीर्वाद प्राप्त करने तक प्रभु से चिपका रहा। जैसा याकूब परमेश्वर को पकडे रहा, उसने उसे आशीर्वाद दिया जैसे लिखा गया हैं **उत्पत्ति** ३२रू२४–२९ में – **तब याकूब अकेला रह गया और एक पुरूष आकर पौ फटने तक उस से कुश्ती लड़ता रहा। और जब उसने देखा कि मैं उस पर प्रबल नहीं होता तो उसने उसकी जांघ की नस को छुआ इसलिए याकूब की जांघ की नस कुश्ती लड़ते समय जोड़ से उखड़ गई। तब उसने कहा, ‘मुझे जाने दे क्योंकि भोर होने वाला है।’ परन्तु याकूब ने कहा, ‘जब तक तू मुझे आशीर्वाद न दे, मैं तुझे न जाने दूंगा।’ तब उसने पूछा, ‘तेरा नाम क्या है?’ और उसने कहा, ‘याकूब।’ तब उसने कहा, ‘अब से तेरा नाम याकूब नहीं परन्तु इस्राएल होगा, क्योंकि तू परमेश्वर से और मनुष्यों से लड़ कर प्रबल हुआ है।’ तब याकूब ने उस से कहा, ‘कृपा करके मुझे अपना नाम बता।’ परन्तु उसने कहा, ‘तू मेरा नाम क्यों पूछता है?’ फिर उसने उसे वहीं आशीर्वाद दिया।** प्रभु ने याकूब से भेंट किया, और उसने अपनी भेंट व्यर्थ होने कभी नहीं दिया और प्रभु से एक आशीर्वाद प्राप्त किया। हम नहीं जानते कब प्रभु हमारा भेंट करेगो, लेकिन जब ऐसा होता हैं तब हमें प्रभु से एक आशीर्वाद प्राप्त करना चाहिए। भजन रचईता पक्ष में उसे याद करने के लिए प्रभु से पूछता हैं और उद्धार के साथ उस से भेंट करे। हमारा परमेश्वर प्यारा और एक जीवित परमेश्वर है। हमें पता नहीं हैं कि परमेश्वर का अनुग्रह हमसे कैस भेंट करेगा। हम उसके चुने हुए लोग और उसका परिवार के हैं, उसका अनुग्रह हमेशा हम पर होगा। जब प्रभु हमसे भेंट करेगा, हमें इस अनुग्रह को व्यर्थ नहीं करना चाहिए और यह हमारे जीवन में प्राप्त किया जाना चाहिए। याकूब अकेला छोड़ दिया गया था लेकिन जब प्रभु ने उस से भेंट किया उसने अपने जीवन में एक आशीर्वाद प्राप्त किया। प्रभु ने जंगल में मूसा से भेंट किया और आग से उससे बात की और उसने परमेश्वर की आवाज़ की बात मानी और प्रभु के साथ ही था। प्रभु ने शाऊल से भेंट किया और उसे पौलुस में बदल दिया है। प्रभु के दर्शन करने के बाद व्यक्ति का जीवन बदल जाता है।

जो भी दुरूख, अंधेरा या समस्या, कुछ भी प्रभु से छिपता नहीं हैं और कोई भी उसके आशीर्वाद को रोक नहीं सकता। शाऊल ने परमेश्वर के बच्चे को परेशान कर दिया था उनकी बहुत पिटाई करके और उन्हें जेल में डालकर, लेकिन प्रभु इस बुरे व्यक्ति के जीवन का भेंट किया। शाऊल ने उस समय का इस्तेमाल किया प्रभु से यह पूछकर कि उसे क्या करना चाहिए। उस समय का इस्तेमाल किया प्रभु से यह पूछकर कि उसे क्या करना चाहिए। उस समय से उसने अपने आप को परमेश्वर के हाथों में आत्मसमर्पण कर दिया। उसने प्रभु से अनुग्रह प्राप्त किया। हम पढ़ें **प्रेरितों के काम ९रू१–६ — फिर शाऊल जो अभी भी प्रभु के शिष्यों को धमकियां देने तथा उनकी हत्या करने की धुन में था, महायाजक के पास गया, और उस से दमिश्क के आराधनालयों के लिए इस अभिप्राय से पत्र प्राप्त किए कि यदि उसे इस पंथ के अनुयायी मिलें, वे चाहैं स्त्री हों अथवा पुरूष, तो उन्हें बांध कर यरूशलेम ले आए। और ऐसा हुआ कि यात्रा करते हुए जब वह दमिश्क के समीप पहुंचा तो सहसा आकाश से एक ज्योति उसके चारों ओर चमकी, और वह भूमि पर गिर पड़ा और उसने एक आवाज़ यह कहते हुए सुनी, ‘शाऊल! शाऊल! तू मुझे क्यों सताता है?’ उसने पूछा, ‘प्रभु, तू कौन हैं?’ तब उसने कहा, ‘मैं येशु हूं जिसे तू सताता है। परन्तु उठ और नगर में जा और जो करना हैं वह तुझे बता दिया जाएगा।’** पौलुस कांपा और उसे क्या करना हैं उसने परमेश्वर से पूछा। प्रभु एक उज्ज्वल प्रकाश में पौलुस से भेंट किया। इसी प्रकार प्रभु ने अलग अलग तरीकों से अलग अलग लोगों से भेंट किया। प्रभु ने याकूब के अकेलेपन में उससे भेंट किया और उसके नाम को एक धन्य नाम में बदल दिया। प्रभु ने आग के बीच मूसा से बात किया, और उसे इस्राएल के लोगों का नेतृत्व करने के लिए अनुग्रह दे दी। प्रभु ने शाऊल को अंधा बनाया, उसे आशीर्वाद देकर आगे के निर्देशों के लिए प्रतीक्षा करने के लिए कहा। शाऊल जैसे एक ऐसी बुरे मनुष्य ने अपने जीवन में परमेश्वर के अनुग्रह को प्राप्त किया। उसके बाद उसका जीवन बदल गया था और उसने प्रभु के लिए एक अच्छा जीवन जीने के लिए अनुग्रह प्राप्त किया। हम नहीं जानते कि प्रभु हमसे कब भेंट करेगा। हम विचार कर सकते हैं कि प्रभु और उनके तरीके बुरें हैं या ऐसा लग सकता हैं कि यह गलत है, लेकिन प्रभु जिस से प्यार करता हैं उन्हें कभी नहीं त्यागेगा। प्रभु की आंखें उन पर होंगी। शाऊल बहुतायत से परमेश्वर के बच्चे को परेशान कर रहा था और अंत में परमेश्वर के बच्चों को जेल में डालने के लिए एक आदेश भी मिला। प्रभु इस प्रकार के एक व्यक्ति का भेंट किया और शाऊल समझ गया और

उसके जीवन में परमेश्वर के अनुग्रह को प्राप्त किया। वह परमेश्वर के आशीर्वाद और प्रकाषण के साथ एक अच्छा नौकर बन गया।
प्रभु ने जक्कई से एक दिन भेंट किया। वह एक दुष्ट आदमी था लेकिन प्रभु ने उस से भेंट करने के बाद उसने अपने जीवन में परमेश्वर के अनुग्रह को प्राप्त किया जब उसने उन सभी को जिसे उसने धोखा दिया था वापस अदा करने को तैयार हआ। जब परमेश्वर ने उस से भेंट किया वह परमेश्वर के परिवार में जोड़ा गया। हम पढ़ें **लूका** १९रू५–९ – **जब येशु उस स्थान पर पहुँचा तो उसने ऊपर देख कर उस से कहा, ‘जक्कई, शीघ्र नीचे उतर आ, क्योंकि आज मुझे तेरे घर में रहना है।’ और उसने झटपट नीचे उतरकर प्रसन्नतापूर्वक उसका स्वागत किया। जब लोगों ने यह देखा तो वे सब यह कहकर कुड़कुड़ाने लगेः ‘वह तो एक पापी मनुष्य का अतिथि बनने गया है।’ जक्कई ने खड़े होकर प्रभु से कहा, ‘प्रभु, देख, मैं अपनी आधी सम्पत्ति कंगालों को दे दूँगा और यदि मैंने किसी से अन्याय करके कुछ भी लिया हैं तो उसे चौगुना लौटा दूंगा।’ और येशु ने उसके लिए कहा, ‘आज इस घर में उद्धार आया है, क्योंकि यह मनुष्य भी इबाहीम का एक पुत्र है।** लोग सोच रहैं थे कि क्यों प्रभु एक पापी के घर में जा रहा था। जब हम अपने जीवन में परमेश्वर की भेंट को स्वीकार करते हैं , तो हमें लाभ होगा और हम अपने जीवन में परमेश्वर के अनुग्रह को प्राप्त करते हैं। प्रभु ने क्रूस पर दो चोरों का भेंट किया लेकिन उसमें से एक ने परमेश्वर के अनुग्रह को प्राप्त किया और नरक से स्वर्ग पर पहुंच गया। हमें पता नहीं किस स्थिति में प्रभु हमसे भेंट करेगा। लेकिन जब हम परमेश्वर के अनुग्रह को प्राप्त करते हैं फिर हम अपने जीवन में उसका आशीर्वाद प्राप्त करते हैं। भजन रचईता एक छोटी सी प्रार्थना को **भजन संहिता** १०६रू४ में कहता हैं – **हैं यहोवा, उस कृपा के अनुसार जो तू अपनी प्रजा पर करता है, मुझे स्मरण कर; उद्धार करके मेरी सुधि ले।** इसलिए सभी मामलों में हमें हमारे जीवन और हमारे परिवार में उनकी कृपा प्राप्त करनी चाहिए। हम नहीं जानते कि वह हम से कब भेंट करेगा। उसकी आँखें, उसके लोगों पर हमेशा हैं, उसके चुने हुए लोगों पर और जो उसका काम करते हैं। जब हम परमेश्वर के अनुग्रह को प्राप्त करते हैं फिर हमें इस अनुग्रह का लाभ लेना चाहिए। प्रभु इन सभी घरों में जहाँ भी गए, उन्होंने परमेश्वर के दया और आशीर्वाद को प्राप्त किया। आज भी यह हमारे जीवन में अनुग्रह का समय है। प्रभु ने क्रूस पर उसका जीवन दिया हैं और हमें उसका अनुग्रह दिया है। आज हम हमारी प्रार्थनाओं का जवाब प्राप्त कर सकते हैं, हमारी बीमारी से चंगा हो सकते हैं और उसके अनुग्रह से हमारे बंधन से वितरित किए जा सकते हैं। एक भाई हैं जिनका कुछ साल

पहले कैंसर के लिए ऑपरेशन किया गया था। एक बार फिर जब पेट दर्द हुआ, डॉक्टरों ने कहा कि निश्चित रूप से उन्हें फिरसे कैंसर हुआ है। अब सभी परीक्षण किया जाना था। तब उन्होंने सालों पहले के उनके घर के अंधकार और दुख को याद किया। उन्होंने याद किया कि उन्हें आपरेशन के समय के दौरान कितनी मुसीबतों से गुज़रना पड़ा था। उस समय उस परिवार ने हमारे अनुग्रहकारी प्रभु की दया को याद किया। वे परीक्षण के लिए जाने से पहले प्रार्थना के लिए बुलाया यह अनुरोध करके कि यह बीमारी फिर से नहीं आना चाहिए और प्रार्थना के माध्यम से परमेश्वर उनके लिए एक चमत्कार करना चाहिए। मैने उस भाई के लिए प्रार्थना की और जब रिपोर्ट आया तो सब कुछ ठीक था। हमें पता नहीं हैं उदासी और दुःख की क्या स्थितियों में प्रभु हमारी भेंट करेगा। लेकिन जब हम उस स्थिति में परमेश्वर के अनुग्रह को प्राप्त करते हैं फिर हम अपने घरों में परमेश्वर कि आशीष को प्राप्त करते हैं। जब हम अपने जीवन में इस समय को समझ नहीं पाते फिर हम अपने जीवन में दुःख प्राप्त करते हैं। प्रभु अपने लोगों को नहीं त्यागेगा और वह हमेशा अपने चारागह में उनका मार्गदर्शन करेंगे। वह एक जिद्दी चरवाहा है। जब प्रभु हमसे भेंट करता है, अपने वचन के माध्यम से हमसे बोलता है, या अपने दास के माध्यम से हमें वचन देता है, यह महत्वपूर्ण हैं हमें हमारे जीवन में उसका अनुग्रह प्राप्त करने के लिए। हम अनुग्रह के मौसम में आज रह रहैं हैं। वचन कहता हैं २ **कुरिन्थियों** ६रू२ में – **क्योंकि वह कहता है, ग्रहण किए जाने के समय मैंने तेरी सुन ली, और उद्धार के दिन मैंने तेरी सहायता की।ष देखो, अभी ग्रहण किए जाने का समय है। देखो, अभी वह उद्धार का दिन है।** हमारा परमेश्वर बदला नहीं है। वह अभी भी हमारी प्रार्थना सुन रहा हैं और हमारे लिए अनुग्रहकारी और दयालु होगा। हमें विश्वास करना चाहिए कि प्रभु बदला नहीं है, और उसका वचन बदला नहीं है। जब हम भी बदलते नहीं हैं फिर परमेश्वर निश्चित रूप से हमारे जीवन में उनके काम करेगा। कोई बात नहीं हमें क्या दुःख या परेशानियों का सामना करना पड़े। हम कई बार गिर सकते है, लेकिन अब (आज) यह जागने का समय हैं क्योंकि यह उसके दया और अनुग्रह का समय है। उसका रक्त अमूल्य है। इस दिन तक किसी ने भी प्रभु येशु की तरह खून बहाया नहीं है। आज हम उसके रक्त और उसके अनुग्रह का मूल्य नहीं समझते तो हम नहीं बच सकते है। पवित्र शास्त्र **इब्रानियों** २रू४ में कहता हैं – **परमेश्वर ने भी चिह्नों, चमत्कारों और विभिन्न प्रकार के आश्चर्यकर्मों तथा अपनी इच्छा के अनुसार पवित्र आत्मा के वरदानों के द्वारा इसकी साक्षी दी।** उसके अनुग्रह और दया से आज भी प्रभु हमारे लिए साक्षी

देता हैं लक्षणों, आश्चर्यों और चमत्कारों के माध्यम से। यहां तक कि अब भी हम उनके गवाही को सुन रहैं हैं। यह सब उसकी कृपा से और पवित्र आत्मा के वरदानों से होता हैं और नहीं हमारे बुद्धि और ज्ञान के द्वारा। दुनिया और दुनिया की चीजें हमें नहीं बचा सकती है, दोनों अब या भविष्य में भी। यह महत्वपूर्ण हैं कि परमेश्वर के कार्य हमारे जीवन में किया जाए। प्रभु एक व्यक्ति को भेंट करता हैं तो वह प्रभु के अंतर्गत आता है। प्रभु अलग अलग तरीकों से क्रूस पर याकूब, मूसा, जक्कई और चोर का भेंट किया। आज हम पापी, झूठे और बुरे लोग हो सकते हैं, लेकिन प्रभु हमसे भेंट कर सकता हैं क्योंकि वह एक दया का और कृपा का परमेश्वर है। हमें उस पर विश्वास करना चाहिए। प्रभु ने कई लोगों के जीवन में संकेतों, आश्चर्यकर्मों और चमत्कारों के माध्यम से कई काम किए है। यह हमारे जीवन में विश्वास लाता है। हम हमारे ऊपर परमेश्वर की आत्मा, दया और अनुग्रह की आत्मा होने कि इच्छा होनी चाहिए। हमें सोचना चाहिए कि आज भी हम पर परमेश्वर की दया और अनुग्रह की आत्मा हैं । अगर हम अशुद्ध हैं, तो पवित्र आत्मा हमारे जीवन में कैसे काम कर सकता है? यह उसके अनुग्रह और दया के द्वारा होता है। प्रभु ने हमसे इतना प्यार किया है, कि उसने हमें उसकी पवित्र आत्मा दी है। जब हम इन सब के बाद भेंट को महत्त्व नहीं देते, उसके कार्यों और परमेश्वर के वचन को, फिर हम कैसे आगे कठिन समय में बच सकते है। उसका अनुग्रह और दया ही एक ही रास्ता हैं जो हमें हर मुश्किल स्थिति से बचा सकता हैं। यह हो सकता हैं बीमारी, अंधेरे या कठिनाइयों इस दुनिया में जिस से हमें सामना करना पड़ सकता है। हमें प्रभु पर विश्वास रखना चाहिए। हमें विश्वास रखना हैं कि हमारा प्रभु हमारी ओर दयालु है। हमें याद रखना हैं कि प्रभु हमारे लिए मरा है, पवित्र आत्मा के माध्यम से हमारे जीवन में काम कर रहा हैं और अपने वचन के माध्यम से हम से बात करेगा। जब हमें यह विश्वास नहीं है, तो आगे के कठिन समय से हमें बचाने के लिए कोई नहीं होगा। हमें बचाने के लिए हमारे पास केवल एक ही परमेश्वर है। हमारा परमेश्वर एक है। हमें इस परमेश्वर पर विश्वास रखना चाहिए। विभिन्न देवताओं हो सकते हैं, प्रत्येक सड़क के कोने पर। लेकिन वे हमारी प्रार्थना सुन नहीं सकते हैं और ना हीं हमारे दुःख देख सकते हैं। हमारा परमेश्वर जीवित हैं और उसे कान हैं और वह हमारी प्रार्थना सुनता है।

उसे देखने के लिए आँखें हैं और वह एक परमेश्वर हैं जो हमसे बात करता है। जब हम अपने परमेश्वर पर विश्वास करते हैं तो हम आगे के बुरे दिनों से बच सकते हैं। पवित्र शास्त्र **इब्रानियों** २रू३ में कहता हैं – **तो हम ऐसे**

महान उद्धार की उपेक्षा कर के कैसे बच सकेंगे? इसका वर्णन सर्वप्रथम प्रभु द्वारा किया गया और इसकी पुष्टि सुनने वालों ने हमारे लिए की। विश्वास हमारे जीवन में बहुत महत्वपूर्ण है। प्रभु पापियों को बचाने के लिए इस दुनिया में आया। पवित्र शास्त्र **भजन संहिता** ६८रू२० में कहता हैं – **परमेश्वर, हमारे लिए छुटकारा देने वाला परमेश्वर है; मृत्यु से बचने की राहें भी प्रभु यहोवा की हैं।** प्रभु मौत से हमें बचा सकता है। हमारा परमेश्वर एक परमेश्वर हैं जो हमें अनुग्रह देता है।

उसके पास हमें मूर्ति पूजा से बचाने के लिए एक तरीका है। प्रभु ने अब्राहाम से बात की, कि उसका बीज चार सौ वर्षों के लिए एक मुश्किल दौर से गुज़रेगा और फिर वह उन्हें उद्धार देगा। पवित्र शास्त्र इस बात को **उत्पत्ति** १५रू१३–१६ में कहता हैं – **तब परमेश्वर ने अब्राम से कहा, ष्निश्चयपूर्वक जान ले कि तेरे वंशज एक ऐसे देश में परदेशी होकर रहेंगे जो उनका नहीं है, जहां उन्हें चार सौ वर्ष तक दास्तव में रहना और दुःख सहना होगा। परन्तु मैं उस देश को दण्ड भी दूंगा जिसके दास्तव में वे रहेंगेः उसके पश्चात वे बहुत–सा धन लेकर निकल आएंगे। परन्तु तू तो शानतिपूर्वक अपने पूर्वजों के पास जाएगा; तुझे पूर्ण वृद्धावस्था में मिट्टी दी जाएगी। तब चौथी पीढ़ी में वे फिर यहां लौट आएंगे, क्योंकि एमोरियों का अधर्म अब तक पूरा नहीं हुआ है।ष** यह बात प्रभु ने उसके बीज के बारे में अब्राहाम से कहा। कैसे वें परदेशी होंगे एक देश में जो उनका नहीं था। इस चार सौ साल के बाद प्रभु ने उन से बात की जैसे लिखा हैं **निर्गमन** ३रू१८ में – **ष्तब वे तेरी बात ध्यान से सुनेंगे; और तू इस्राएली पुरनियों के साथ राजा के पास जाकर उस से यह कहना, ष्इब्रानियों के परमेश्वर यहोवा ने हमें दर्शन दिया है। इसलिए अब हमें तीन दिन के मार्ग पर जंगल में जाने दे कि हम अपने परमेश्वर यहोवा के लिए बलि चढ़ाएं।ष** अब इन चार सौ साल के बाद प्रभु ने मिस्र के राजा के पास उनके लोगों को भेजा उन्हें अपने परमेश्वर के लिए बलिदान चढ़ाने के लिए। पहले प्रभु ने अब्राहम से बात की और अब चार सौ साल के बाद उसने अपने लोगों से बात किया। उसने चार सौ साल बाद उन्हें बंधन से मुक्ति देने के लिए उसके लोगों से भेंट किया। उसका अनुग्रह और दया हमेशा से उनके लोगों पर हैं, इसका कोई फ़र्क नहीं पड़ता कि हमारी उम्र क्या है। इन चार सौ वर्षों के दौरान उन्हें नुकसान उठाना पड़ा और बहुत दुःख के माध्यम से चलें। और तब प्रभु ने उन्हें भेजा राजा को बताने के लिए कि वह उन्हें मुक्त करे ताकि वह अपने परमेश्वर कि आराधना करें। बार–बार राजा से कहने के बाद, प्रभु ने अंत में लाल समुद्र को अलग किया और उसके लोगों को बाहर ले आया। हम पढ़े **निर्गमन** २५रू२२ – **और मैं वहा, अर्थात**

प्रायश्चित के ढकने के ऊपर और दोनों करूबों के बीच में जो साक्षीपत्र के सन्दूक के ऊपर हैं, तुझ से मिला करूंगा और उन सब आज्ञाओं के विषय में, जो मैं तुझे इस्राएलियों के लिए देने पर हूँ, बातें करूँगा। हम नहीं जानते कि कब और कहा प्रभु हमसे भेंट करेगा। जब प्रभु हमसे भेंट करेगा यह महत्त्वपूर्ण हैं कि हम इस अनुग्रह को हमारे जीवन में प्राप्त करें। हम पढ़े **रूत १रू६ – तब वह अपनी बहुओं के साथ मोआब के देश से जाने को चली; क्योंकि उसने सुना कि यहोवा ने अपने लोगों की सुधि लेकर उन्हें भोजन–वस्तु दी है।** नाओमी को विश्वास था कि यहोवा अपनी प्रजा से भेंट करेगा और उन्हें रोटी देगा। हमें विश्वास होना चाहिए कि सभी परिस्थितियों में प्रभु हमसे भेंट करेगा और उसकी आँखें हम पर होगी, वह हमारी प्रार्थना का जवाब देगा और हमारा दुख देखेगा। प्रभु का प्यार उनके लोगों के प्रति हमेशा से रहा है। वह अनुग्रहकारी और उनके प्रति दयालु है। हमारा कोई भी निवासस्थान हो प्रभु की आँखें हम पर होंगी। हमें यह विश्वास हमारे जीवन में रखना चाहिए पवित्र शास्त्र **भजन संहिता ३४रू१०** में कहता हैं – **जवान सिंहों को तो घटी होती है, और वे भूखे भी रह जाते हैं, परन्तु यहोवा के खोजियों को किसी भली वस्तु की घटी न होगी।** जो लोग प्रभु की खोज करते हैं उन्हें अपने घरों में परेशानी का सामना नहीं करना पड़ता हैं। यही कारण हैं कि दाऊद ने **भजन संहिता २३रू२,१** में गवाही दी कि – **वह मुझे हरे हरे चरागाहों में बैठाता है; वह मुझे सुखदायक जल के सोतों के पास ले चलता है। यहोवा मेरा चरवाहा है, मुझे कुछ घटी न होगी।** हमारा विश्वास प्रभु हमारे चरवाहा पर होना चाहिए। हमें उस रास्ते में चलना चाहिए जहा वह हमें ले जाता है। वह हमें हरी चराई के माध्यम से और सुख दाई जल से हमें ले चलता है। तो दुःख में, खुशी में और सभी परिस्थितियों में हमारा विश्वास परमेश्वर पर होना चाहिए। हमें पता होना चाहिए कि उसकी आँखें हम पर हैं और वह हमारे लिए एक रास्ता बनाएगा। पवित्र शास्त्र **यूहन्ना ६रू११–१२** में कहता हैं – **तब येशु ने रोटियाँ लीं, और धन्यवाद करके, उन्हें जो बैठे थे बांट दीं, उसी तरह मछलियों को भी जितनी वे चाहते थे बांट दीं। जब वे तृप्त हो गए तो उसने अपने चेलों से कहा, ‘बचे हुए टुकड़ों को बटोर लो कि कुछ भी नष्ट न हो।’** यहाँ हम देखते हैं कि प्रभु लोगों को संतुष्ट करता हैं और जितना ज़रूरत हैं उतना देता है। लोग संतृष्ट होने पर भी वहाँ खाना बचा हुआ था। हमारा परमेश्वर एक परमेश्वर हैं जो हमें आशीर्वाद देता है। वह केवल हमारे लिए नाश्ता या भोजन नहीं देगा, लेकिन वह हमें आशीर्वाद भी देगा। जब हन्ना एक बच्चे के लिए रोई प्रभु ने उसे पांच बच्चों के साथ आशीर्वाद दिया। हमारे परमेश्वर की दया एक या दो दिन के लिए नहीं है।

जब प्रभु हमसे भेंट करता है, हमारा जीवन बदल जाता हैं। प्रभु वह उन सभी लोगों के जीवन में सामर्थ के काम किए जिस से उसने भेंट किया। प्रभु ने उन्हें वचन सुनाया और भोजन भी खिलाया। जिन लोगों से प्रभु ने भेंट किया उनके घर और जीवन बदल गए। अंधों ने नज़र प्राप्त किया, लंगड़ें चलने लगे और वे सभी ने नया जीवन प्राप्त किया। जब प्रभु हमसे भेंट करता हैं तो हमें अपने जीवन में परमेश्वर के अनुग्रह को प्राप्त करना चाहिए। प्रभु प्रचार किए गए वचन के माध्यम से हमसे भेंट कर सकता हैं और जो ताड़नाए हमें दी जाती है। हमें पता नहीं कि कैसे प्रभु हमसे भेंट करेगा। इसलिए हमें हमेशा प्रभु की खोज में रहना है। हमारा दिल और मन प्रभु पर विश्वास करना है। जब एलिय्याह विधवा के घर में भेंट किया तब उनके पास खाना नहीं था। वहाँ थोड़ा आटा और तेल था जिस से वे रोटी बनाना चाहते थे और खाकर मरे। प्रभु एलिय्याह के माध्यम से उस घर में भेंट किया। एलिय्याह ने पहले रोटी उसके लिए बनाने को कहा। जब विधवा ने बात मानी, कठिन समय समाप्त होने तक उस घर का आटा और तेल कम नहीं हुआ। हमें पता नहीं कैसे प्रभु हमें या हमारे घरों को भेंट करेगा। हर स्थिति में हम अपने शक्तिशाली परमेश्वर पर भरोसा करना है। पवित्र शास्त्र **भजन संहिता ६५रू४** में कहता हैं – **क्या ही धन्य हैं वह जिसे तू चुनकर अपने निकट लाता है, कि तेरे आंगनों में वास करे। हम तो तेरे भवन की, तेरे पवित्र मनदिर की उत्तमता से तृप्त होंगे।** प्रभु जिस मनुष्य को चुनता है, वह आशिषित है। तो आशिषित होने के लिए यह ज़रूरी हैं कि प्रभु हमसे भेंट करे। पवित्र शास्त्र **प्रेरितों के काम १४रू१७** में कहता हैं – **फिर भी उसने अपने आप को गवाह रहित नहीं छोड़ा, किन्तु वह भलाई करता रहा और तुम्हें वर्षा तथा फलवंत ऋतुएं देकर तुम्हारे हृदयों को भोजन तथा आनन्द से तृप्त करता रहा।**৳ प्रभु ने उसके लोगों का ध्यान रखा खाने के लिए उन्हें भोजन देकर, बारिश और उन्हें शांति और खुशी देकर। यह एक गवाही है। ये सब बातें हमारे जीवन में काम करनी चाहिए। जहां प्रभु है, वहाँ उसकी कृपा, दया, खुशी, शांति और आशीर्वाद होगी। तो हमारे कलिसियाँ में, हमारे घरों में और हमारे परिवारों में हमें इन मामलों को सुनने के बाद यह महत्वपूर्ण हैं कि प्रभु पर विश्वास करे। हमें विश्वास होना चाहिए कि जैसे प्रभु ने अन्य लोगों के जीवन में काम किया है, वह मेरे जीवन में भी ऐसा ही कर सकता हैं। हमें इन गवाहियों पर और हमारे परमेश्वर पर विश्वास करना चाहिए। हमें विश्वास करना चाहिए कि प्रभु मेरे जीवन में भी यह सब कर सकता हैं। वह प्रभु जिसने दूसरों के जीवन में यह काम किया है, मेरे जीवन में भी ऐसा कर सकता हैं। वह परमेश्वर जिसने उसे आशीष दिया है, मुझे भी

आशीर्वाद दे सकता है। यह महत्त्वपूर्ण हैं कि हम गवाही पर और हमारे परमेश्वर पर विश्वास करे। लुका १५ में हमने ऐयाशी बेटे के बारे में पढ़ा कैसे वह अपने पिता से दूर चला गया और दुःख और अधिक कठिनाई का सामना करना पड़ा। उसके खाने के लिए भोजन नहीं था और वह सूअरों का खाना खाने के लिए भी तैयार था। अंत में उसके साथ क्या हुआ, हम पढ़ें **लूका १५रू२३ – और एक मोटा बछड़ा लाकर काटो कि हम खाएं और आनन्द मनाएं।** हम देखते हैं कि यह पुत्र बुरा था और उसने अपने पिता के धन को नष्ट कर दिया था। प्रभु ने उसके जीवन में एक आकाल लाया। अगर ऐसा समय उसके जीवन में नहीं आता तो वह पिता के पास नहीं लौटता। यह परमेश्वर का प्यार है। परमेश्वर ने उसके जीवन में ऐसी स्थिति लाया यहां तक कि जो भोजन सूअर खाते थे उसे भी प्राप्त करने में वह असमर्थ था। पर जब वह घर आया पिता ने मोटे बछड़ें को काट कर तैयार करने का आदेश दिया ताकि वे आननदित हो सके। अगर यह पिता बेटे पर दया कर सकता हैं, तो कितना अधिक स्वर्गीय पिता हम पर दया करेगा, जिसने अपने हाथों से हमें बनाया है। हमारा काम हैं की हम परमेश्वर की ओर फिरे, उसके पास आए और उस पर विश्वास रखें। यह दुनिया केवल कुछ दिनों के लिए हमें खुशी दे सकता हैं, लेकिन प्रभु हमें भरपुरी से खुशी दे सकता हैं। पुत्र के समझ में आया कि वह इस दुनिया में कुछ भी करने में सक्षम नहीं होगा और वह पिता कि ओर आना शुरू किया। पिता ने यह देखा और उस के प्रति दयालु था और उसने मोटा बछड़ा काटा और आनंद मनाया। यह हमारे स्वर्गीय पिता का प्यार आज भी है। प्रभु हमसे दृष्टान्तों में बाते करता है। आज हालांकि हम कितने भी बुरे हो, अगर हम प्रभु की भेंट को नहीं जानते या, हमारे कानों को प्रभु की आवाज़ के लिए नहीं खोला हो, या, प्रभु ने जो सच्चा मार्ग जो हमारे लिए तैयार किया हैं नहीं चला हो, तो आज यह हमारे लिए महत्त्वपूर्ण हैं कि हम ऐयाशी पुत्र के समान हमारे पिता के पास वापस जाना हैं जिसने पछतावा किया और वापस पिता के पास आ गया। जब हम वापस आएंगे, हमारा पिता हमें कभी नहीं छोड़गा, क्योंकि यह दया और प्रेम का समय है। हम पढ़ें **उत्पत्ति** ५०रू२५ में यह देखने के लिए कि कैसे विश्वास में, यूसुफ ने अपने मृत्यु के समय उसके लोगों को सलाह दी – **तब यूसुफ ने इस्राएलियों से यह कहकर प्रतिज्ञा करवाई कि परमेश्वर निश्चय तुम्हारी सुधि लेगा और तुम मेरी हड्डियों को यहां से अवश्य ले जाना।** अब यह ४०० साल पहले की बात है, कि प्रभु ने अब्राहम से यह बात कहा कि उसका वंश दासत्व में होगा, उसके बाद प्रभु वादा किया देश को उन्हें ले जाएगा। यूसुफ को पता था कि वे अभी तक वादा किया देश तक पहुँच नहीं

थे, लेकिन उसने अपने लोगों को बताया कि प्रभु निश्चित रूप से उनसे भेंट करेगा। प्रभु झूठ बात नहीं करता और जो वह बोलता हैं निश्चित रूप से ऐसा करता भी है। इस भेंट के समय, उसने वादा के भूमि से उसकी हड्डिय ँा ले जाने के लिए लोगों को बताया। यूसुफ को पता था कि जब प्रभु का आना फिर से होगा तब जो लोग मसीह में मारे गए हैं, पहले पुनरूत्थान उनका होगा। इसलिए यूसुफ उसकी हड्डियों को दासत्व की भूमि में रखाना नहीं चाहता था, पर चाहता था कि उसकी हड्डियों को वादा किए देश को ले जाएँ। उसका यह विश्वास था कि इन चार सौ साल के बाद प्रभु उनका भेंट करेगा और वादा किया देश को उन्हें ले जाएगा। जब प्रभु हमसे बोलता है, हमें अपने दिलों में विश्वास रखना चाहिए क्योंकि हमें पता नहीं कि कैसे प्रभु उसकी बात किए हुए वचन को पूरा करेगा। प्रभु ने याकूब से भेंट की और उसके साथ कुश्ती लड़ी, उसने जलती झाड़ी के बीच में मूसा से भेंट की। प्रभु ने शाऊल को अंधा किया और उससे भेंट की। प्रभु ने जक्कई को बचाने के लिए उससे भेंट की और क्रूस पर चोर से भी भेंट की। प्रभु ने जहाँ भी अपने लोगों से भेंट की उसने एक शक्तिशाली काम का प्रदर्शन किया। यूसुफ ने याद किया उस बात को जो प्रभु ने अब्राहम से किया था चार सौ साल के बाद भी। अब यह वचन उसके जीवन में पूरा हो रहा था। पवित्र शास्त्र **आमोस** ४रू१२ में कहता हैं – **ष्इस कारण हैं इस्राएल, मैं तुझ से ऐसा ही करूंगा। इसलिए कि मैं तुझ से ऐसा करूंगा, हैं इस्राएल, तु अपने परमेश्वर से भेट करने के लिए तैयार हो जा।ष** इसलिए हमें अपने परमेश्वर से मिलने के लिए तैयार होना चाहिए। यह केवल गाकर नहीं, लेकिन हम वास्तव में खुद को तैयार करना चाहिए। प्रभु निश्चित रूप से तुम्हारे परिवार में तुम से भेंट करेगा और तुम्हारे घर में भी। वह तुम्हें छोड़गा नहीं क्योंकि वह एक सच्चा और जीवित परमेश्वर है। प्रभु आज भी नहीं बदला है। जैसे उसने इस्राएलियों को बताया उसी तरह वह हमें भी उसके भेंट के लिए तैयार होने के लिए हमें बता रहा है। पवित्र शास्त्र **यहेजकेल** ३८रू७ में कहता हैं – **ष्तू अपने चारों ओर इकट्ठी सारी सेना के साथ तैयार हो जा और अपने को तैयार रख। उनका रक्षक बन।** हमें पहले खुद को तैयार करना हैं फिर हमारे चारों ओर के लोग और फिर हम उनके लिए एक पहरेदार होना जरूरी है। हमें लोगों के लिए एक चौकीदार के समान रहना है। जब प्रभु बोलता है, सुधार देता हैं या खड़े करने के लिए हमें बताता है, हमें हर समय पालन करने के लिए तैयार रहना चाहिए। हर समय हमें देखते और प्रार्थना करते रहना हैं। हम नहीं जानते कि कब प्रभु अपने लोगों को खड़ा रहने के लिए कहेगा, बैठने के लिए या सोने के लिए भी। पहले हमें खुद को तैयार रखना

है। अगर हम तैयार रहते हैं तो हम अपने साथीयों को भी तैयार कर सकते हैं। अगर हम अपने आप को तैयार नहीं करते हैं और हमारे दीपक में तेल नहीं हैं तो कैसे हम दूसरों को तेल दे सकते हैं। यह तेल दुकानोंमें उपलब्ध नहीं है। हमें पहले परमेश्वर से ज्ञान प्राप्त करना चाहिए। यही कारण हैं प्रभु कहता हैं कि वह हमारी भेंट करने के लिए कभी भी आ सकते हैं।

जब प्रभु ने दस कुंवारियों कि भेंट की, वहाँ पांच बुद्धिमान और पांच मूर्ख कुंवारीयां थी। परमेश्वर का वचन सुनने के बाद, बुद्धिमान होना या नहीं होना, हमारे हाथ में है। हमें तैयार होना हैं क्योंकि प्रभु हमसे भेंट कर सकता है, और हमसे किसी भी समय बोल सकता है। अगर हम वचन के अनुसार खुद को तैयार करते हैं फिर हम बुद्धिमान लोग बन जाएंगे। हम अपने जीवन में दया, आशीर्वाद और आनन्द प्राप्त करेंगे। एक बार दरवाज़ा बंद होता हैं फिर खटखटाने से मदद नहीं मिलती, क्योंकि इसे खोला नहीं जाएगा। तब प्रभु कहेगा, ़मैं तुम्हें नहीं जानता़ प्रभु हमसे कहेगा कि उसने हमसे भेंट किया था और हमें याद दिलाएगा कि जब उसके पास खाना नहीं था हमने उसे खाना नहीं दिया। जब उसके पास कपड़ा नहीं था हमने उसे कपड़ा नहीं पहनाया। फिर हम उसे बुलाकर पुछेंगे कब हमने उसे कपड़ा नहीं दिया और भोजन भी तो प्रभु हमारी भेंट कब करेगा हम नहीं जानेंगे। हमें प्रभु पर हर समय विश्वास रखना हैं और तैयार रहना चाहिए। एक बार बूढ़ें चाचा दोनों पैरों के बिना वृद्धाश्रम में दाखिल होने के लिए आए थे। उस समय मैं मेरे दिल में केवल एक ही ड़र था कि एक दिन प्रभु ़मुझे नहीं पूछना चाहिए कि ़मैं तुम्हारे पास अपंग होकर आया था और तुम ने ़मुझे स्वीकार नहीं किया था। विकलांगों की सेवा करना आसान नहीं है। सभी स्थितियों में हमें पता होना चाहिए कि प्रभु क्या चाहता हैं और हमें अपने दिल में प्रभु का भय और विश्वास होना चाहिए। इस वचन और प्रभु के ड़र से मैंने आश्रम में इस चाचा को स्वीकार कर लिया। क्योंकि एक दिन हम भी पापी थे, अंधे थे मूर्ति पूजक थे, लेकिन प्रभु ने हमसे प्यार किया हैं और हमें उनकी दया दिखाया गया है। इसलिए हमें भी दूसरों को इस दया को दिखाना है।

हम पढ़ें **ज़कर्याह १४रू१५ फिर उन छावनियों के घोड़े, खच्चर, ऊंट, गदहैं आदि सब पशुओं पर भी ऐसी ही मरी पड़ेगी।** अगर हम अनुग्रह के इस समय को नहीं समझते फिर हम आगे बुरे दिनों से बच नहीं सकते। हम नहीं जानते हैं किस तरीके में हम परेशान होंगे और कठिनाइयों का सामना करना पड़ेगा। शैतान अलग अलग तरीकों से काम करेगा। तो इस प्रकार की स्थितियों से बचने के लिए प्रभु हमारे घरों में और हमारे जीवन में हमारे साथ होना चाहिए। पवित्र शास्त्र **ज़कर्याह** १४रू५ में कहता हैं – **तब तुम मेरे पर्वत की**

तराई से होकर भागोगे क्योंकि पर्वत की तराई आसेल तक पहुंचेगी, हां, तुम ठीक उसी प्रकार भागोगे जिस प्रकार यहूदा के राजा उज्जियाह के दिनों के भूकम्प के आगे भागे थे। तब यहोवा, मेरा परमेश्वर अपने समस्त पवित्र जनों के साथ आएगा। जब प्रभु फिर से आएगा तब सभी संत उसके साथ आ जाए ँगे। जो उसके नाम के लिए मरे और उसके पवित्र लोग उसके साथ आ जाए ँगे। वह चोर भी जिसको प्रभु ने क्रूस पर भेंट की उसके साथ आ जाएगा। परमेश्वर कितना अच्छा हैं आज भी वह अपने वचन के माध्यम से हमसे बोल रहा हैं हमारे जीवन और हमारे घरों में।

पवित्र शास्त्र **प्रकाशितवाक्य** २२रू२० में कहता हैं – **जो इन बातों की साक्षी देता है, वह यह कहता हैः ष्हां, मैं शीघ्र आने वाला हूं।ष आमीन। हैं प्रभु येशु आ!** आज भी हमें इस वचन के अनुसार बुलाना चाहिए, श्प्रभु येशु, जल्दी आश हमें प्रभु से कहना चाहिए श्मेरी जीवन में और मेरे घर में आओश मैं बदलने को तैयार हूँ, और मेरे जीवन में तुम्हारी खुशी और आशीर्वाद चाहता हूँ। मैं चंगा होना चाहता हूँ। जल्दी से प्रभु येशु आओ और मुझ से भेंट करो। वह प्रभु जिसकी गवाही हमने सुनी हैं, कहता हैं, कि वह जल्द आ रहा है। हमें उसकी भेंट के लिए तरसना चाहिए यह कहकर श्प्रभु येशु जल्द आ। मैं, मेरे दिल में आपकी अनुग्रह और शांति चाहता हूँ प्रभु। जैसे आपने जक्कई से भेंट की, जैसे आपने चोर से भेंट की, जैसे आपने शाऊल से भेंट की, जैसे आपने मूसा से भेंट की, और जैसे आपने याकूब से भेंट की, आज प्रभु आ और मुझ से भेंट कर। मेरा जीवन बदलने दो।श निश्चित रूप से प्रभु तुम्हारे घर को भेंट करेगा और तुम्हारे जीवन में सुख, शांति और खुशी लाएगा।

पास्टर सरोजा म.